फरीदाबाद-हरियाणा। मुख्य संसदीय सचिव श्रीमति सीमा त्रिखा को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कौशल्या तथा ब्र.कु. शम्भूनाथ,माउण्ट आबू।

गोण्डा-उ.प्र.। जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

दिल्ली-जैतपुर। जन्माष्टमी पर्व पर दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक नारायण दत्त वर्मा, ब्र.कु. ऊषा तथा अन्य गणमान्य जन।

गुमला-झारखण्ड। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर लगाई गई चैतन्य झाँकी में जन्माष्टमी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. शान्ति। साथ हैं नगर परिषद की उपाध्यक्षा मोसर्रत परवीन, वार्ड कमिश्नर शैल मिश्रा तथा अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हियरिंग एंड हैन्डिकैप में 'फ्री हियरिंग एसेस्मेंट कैम्प एंड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ हियरिंग एड' कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में इंस्टीट्यूट के वाइस प्रेसीडेंट डॉ. वी.पी. शाह, वहाँ का स्टाफ, ब्र.कु. चन्दर, व ब्र.कु. जया।

उधमपुर-जम्मू कश्मीर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर लगाई गई चैतन्य झाँकी के पश्चात् चित्र में झाँकी के बच्चों के साथ ब्र.कु. ममता।

भगवान हर पल करता है आपका इंतज़ार

-गतांक से आगे...

भगवान अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं। हम चाहे उनको पूछें न पूछें, उनको प्यार से याद करें न करें, फिर भी भगवान का प्यार इतना अधिक है बच्चों के प्रति कि उसको मालूम है कि आज बच्चे को प्लेन पकड़नी है, ट्रेन पकड़नी है। तो उसको खटिया हिलाकर उठाता भी है। ये अनुभव किया होगा आप सभी ने। सुबह उठाने से लेकर रात्रि सोने तक वो हमारा ध्यान रखता है।

सुबह उठाने के बाद उसके मन में यही होता है कि मेरा बेटा सबसे पहले उठकर मुझे तो याद करेगा। लेकिन हम क्या करते हैं। उठने के बाद सबसे पहले पूछेंगे कि आज का न्यूज़ पेपर आया कि नहीं आया। न्यूज़ पेपर लेकर बैठ जाते हैं, भगवान को याद नहीं करते। भगवान सोचते हैं चलो कोई बात नहीं, दुनिया की खबर भी पढ़ लेने दो। दुनिया की खबर पढ़ लेने के बाद ज़रूर मुझे याद करेगा ही करेगा। लेकिन न्यूज़ पेपर पढ़ने के बाद हम क्या करते हैं? स्नान आदि करके, फ्रेश होकर नास्ता करने बैठ जाते हैं। भगवान सोचते हैं, चलो कोई बात नहीं, उसको भूख लगी है ना, खा लेने दो। खाने के बाद तो पहले मुझे याद करेगा। फिर भी वे इंतज़ार करते रहते हैं। खाने के बाद हम क्या करते हैं। चले दफ्तर, चले ऑफिस, भगवान को याद नहीं करते हैं। स्मृति आती ही नहीं है और ऑफिस जाने के बाद भगवान भी सोचते हैं चलो कोई बात नहीं, उसको जल्दी है ना आज। ऑफिस जा करके काम शुरू करने से पहले दो मिनट ज़रूर मुझे याद करेगा ही करेगा। लेकिन ऑफिस पहुंचने के बाद भी हम क्या करते हैं? सीधा काम में लग जाते हैं, लोगों से बातचीत करने में लग जाते हैं। भगवान की याद कहाँ आती है! भगवान सोचते हैं, चलो कोई बात नहीं, इसको कारोबार भी तो करना है ना! दोपहर को भोजन के समय ज़रूर मुझे याद करेगा ही, उसके बाद भोजन स्वीकार करेगा। लेकिन दोपहर हुई, भोजन स्वीकार कर लिया, भगवान को कहां याद करते हैं। भगवान सोचते हैं, कोई बात नहीं, उसको भूख लगी है, थका हुआ है। शाम को तो ज़रूर मुझे याद करेगा ही करेगा, और शाम जैसे होती है, घर आते हैं भई आज जाना है फलाने की शादी में, पार्टी में जाना है, तैयार हो के निकल जाते हैं। भगवान सोचते हैं, चलो कोई बात नहीं, उसको दुनियादारी भी निभानी है ना! रात को सोने से पहले ज़रूर मुझे याद करेगा ही करेगा। रात को जब घर में आये, आ करके फिर भी अगर टाइम है सोने से पहले, तो क्या करेंगे, टी.वी. चालू करेंगे। भगवान सोचते हैं, चलो कोई बात नहीं, थोड़ा समाचार भी देख लेने दें। सोने से पहले ज़रूर मुझे याद करेगा ही करेगा। लेकिन वहीं टी.वी. देखते-देखते नींद लग जाती है। सारा दिन पूरा हो जाता है। भगवान को याद नहीं करते। फिर भी दूसरे दिन सुबह वे उठाते हैं। वे कितना प्यार करते हैं! आज आप मान लो कि आप अपने बेटे से इतना प्यार करो। सुबह उठाने से लेकर रात्रि तक और आप उसका इंतजार करते रहो कि मेरा बेटा एक बार तो मेरी तरफ देखे और वो आपकी तरफ देखता तक न हो, आपको कैसा लगेगा! इसलिए भगवान हमारे मात-पिता हैं, वो इतना प्यार करते हैं, तो कम से कम हम भी तो उनके प्यार का रेसपॉन्ड तो करें। फिर भी वो कितना दयालु, कृपालु है कि जब भी हमारे सामने कोई परिस्थिति आती है तो फिर भी अदृश्य रूप में शक्ति देते हैं। इतना दयालु, कृपालु कहाँ मिलेगा? यह अनुभव अगर करके देखो तो पता चलता है कि सचमुच भगवान का प्यार कितना है! और हम एक बार भी सुबह से रात तक, उनके तरफ देखते नहीं, और उसके बाद भी भगवान के सामने ही शिकायत करते हैं कि हे प्रभू! मेरा मन तो लगता ही नहीं है। कैसा वो बच्चा होगा, जो अपने माँ-बाप को कहे कि भई, मेरा मन तो आपमें लगता ही नहीं है। इसलिए मैं क्या करूं? माँ-बाप को कैसा लगेगा अगर बच्चा ऐसा कहेगा? - क्रमश:

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

शुद्ध अंतर्मन द्वारा ... - पेज 2 का शेष...

परिणाम सिद्धि युक्त। यहाँ भाव यह है कि हमारे हाथ में सिर्फ कर्म करना है, फल हमारे हाथ में है ही नहीं, क्योंकि यदि हम फल की तरफ देखेंगे तो फल अच्छा भी होगा और बुरा भी होगा, तो जब हम कर्म करने जायेंगे तो नर्वस हो जायेंगे। इसलिए हमें सिर्फ सच्चाई से अंतर्मन के साथ कर्म करना है, फल जो होगा वो हमें स्वीकार्य होगा। फल के लिए योग्य बीज, खाद, सिंचाई और उनकी रख-रखाव की ज़रूरत होती है। आजकल परिस्थिति ऐसी बन गई है कि हरेक 'फल' चाहते हैं, लेकिन योग्य फल के लिए अपेक्षित मेहनत, उनकी देख-रेख, परिश्रम और एकाग्रता के लिए समय नहीं निकालते। इसलिए ज़िन्दगी का अंतिम लक्ष्य सिद्धि, वृद्धि या समृद्धि नहीं, लेकिन मनोशुद्धि द्वारा शान्ति हो सकती है। हृदय और मन को धोने की 'लॉन्ड्री' अब तक खोजी नहीं गई है।

साबुन के विज्ञापनों में हम दो स्त्रियों का ऐसा संवाद सुनते हैं कि मेरी साड़ी से ज़्यादा उनकी साड़ी सफेद क्यों? लेकिन ऐसा संवाद कहीं भी नहीं सुनाई देता कि मेरे मन से उनका मन ज़्यादा सफेद, ज़्यादा ईर्ष्यामुक्त, ज़्यादा नेकीयुक्त, ज़्यादा शानदार कैसे? आज का ज़माना पारितोषिक के दम्भ का है, परितोष और प्रशान्ति का नहीं!

जीवन में सफल होने के पाँच मानक

1. आपके द्वारा कमाया हुआ धन शुद्ध है? अपने मन को आप स्वच्छ रख सकते हो?
2. धन की खातिर धर्म का, सुख की खातिर शान्ति का, सत्ता की खातिर सदाचार का और बड़ाई प्राप्त करने के लिए लाज-शर्म को दरकिनार करते हो या उनकी रक्षा करते हो?
3. आप सुखी और धनवान बनने के लिए कितना समय देते हो, उसमें से थोड़ा समय 'सज्जन' बनने के लिए देते हो या नहीं?
4. आप को सबकुछ मिला, लेकिन पारिवारिक शान्ति मिली?
5. 'शील', 'पवित्रता' और 'दौलत', इन तीनों में से किसी दो को रखने का विकल्प दिया जाये तो आप कौन से विकल्प को पसंद करेंगे?

ख़्यालों के आईने में...

चलो ज़िन्दगी को ज़िंदादिली से जीने के लिए एक छोटा सा उसूल बनाते हैं,
रोज़ कुछ अच्छा करते हैं, कुछ बुरा भूल जाते हैं...।

अहम न करना ज़िन्दगी में, तकदीर बदलती रहती है,
शीशा वही रहता है, बस तस्वीर बदलती रहती है।

ज़िन्दगी में कभी किसी बुरे दिन से रूबरू हो जाओ...
तो इतना हौसला रखना कि दिन बुरा था, ज़िन्दगी नहीं...